



वाराणसी, गुरुवार, 13 अप्रैल, 2023

परख सच की

# जानसंदेश टाइम्स

वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, गोरखपुर एवं प्रयागराज से प्रकाशित

अन्दर : तलत अजीज के गजलों ने रात को दी थपकी

E-paper : [www.jansandeshtimes.net](http://www.jansandeshtimes.net) | Portal : [www.jansandeshtimes.news](http://www.jansandeshtimes.news)

अन्दर : हार्दिक बने भारत के नंबर-1 ऑलराउंडर



## खुदरा महंगाई दर में गिरावट

नई दिल्ली। देश की उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति फरवरी के 6.4 प्रतिशत से घटकर 5.6 प्रति

### संक्षेप

#### गंगा में कूदे जोड़े का शव सामनेघाट उतराया मिला

वाराणसी। लंका थाना क्षेत्र के मलहिया स्थित विश्वसुंदरी पुल से सोमवार को कूदे युवक और किशोरी का शव बुधवार सुबह सामनेघाट परमहंस आश्रम के सामने गंगा में उतराया मिला। दोनों कूदने के पहले चुनरी से हाथ को बांधे थे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजवाया। सूचना मिलने पर रणजीत यादव के पिता रामवृक्ष यादव परिजनों के साथ पहुंचे। वहीं किशोरी के परिजन भी मौके पर पहुंचेयुवक खजूर गांव अलीनगर (चंदौली) का रहने वाला था। किशोरी रोहनिया थाना क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली थीनौवीं कक्षा में पढ़ाई करती थीसोमवार को घर से दोपहर को कंप्यूटर क्लास करने के लिए निकली थी किशोरी के मौसी के गांव का युवक रहने वाला था। युवक पशुपालन का काम करता था।

#### छेड़





# 1885 में हो गया था नपं बांसडीह का गठन

#### ये है इतिहास

**1925 में पहले चेयरमैन बने गोविन्द प्रसाद सिंह**

#### जनसंदेश न्यूज

**बांसडीह।** नगर के बुजुर्गों के अनुसार नगर पंचायत बांसडीह का गठन आजादी से पहले सन 1885 में हुआ। इसे नोटिफाईड एरिया का नाम दिया गया था। सन 1914-15 में अंग्रेजी हुकूमत का शासन रहा। 1925 में पहला चुनाव हुआ और गोविन्द प्रसाद सिंह पहले चेयरमैन बने। सन 1927 में भी गोविन्द प्रसाद सिंह पुनः चेयरमैन बने।

सन 1930 में चंद्रशेखर सिंह ने गोविन्द प्रसाद सिंह के निधन के बाद चेयरमैन का पदभार संभाला। सन 1933 से 1952 तक ठाकुर बैजनाथ सिंह चेयरमैन रहे। सन 1952 से लेकर 1961 तक वीर विक्रम सिंह चेयरमैन रहे। सन 196





### जनसंपादकीय

## यूक्रेन युद्ध और वैश्विक कूटनीति

प्रभात कुमार राॅय

यूरोपीय युनियन के अनेक राष्ट्रों ने प्रारम्भ में भारत से बड़ी कूटनीतिक उम्मीद लगाई थी कि भारत वस्तुतः यूक्रेन युद्ध का समुचित निदान निकालने के लिए कोई सांयक कूटनीतिक पहल अंजाम देगा. इस उम्मीद का सबसे अहम प्रस्थान बिंदु रहा कि भारत के रुस के साथ अत्यंत मित्रतापूर्ण संबंध रहे हैं और दूसरी तरफ नाॅटो राष्ट्रों के साथ भी भारत के मधुर कूटीतिक संबंध कायम रहे हैं. अतः भारत को एकमात्र ऐसा देश समझा गया, जोकि विश्व पटल पर किसी सैन्य गुटबंदी में कभी शामिल नहीं रहा. दुर्भाग्य से यूक्रेन युद्ध पर भारत द्वारा केवल शांति और सौहार्द का पैगाम तो दिया जाता रहा, किंतु भारत द्वारा यूक्रेन युद्ध को खत्म करने की खातिर कोई कारगर कूटनीतिक पहल कदापि अंजाम नहीं दी गई. भारत को विश्वग















